

ईडीआईआई ने उद्यमिता गतिशीलता पर सबसे बड़ा अध्ययन कराया



- महामारी के बीच 70 प्रतिशत उद्यमियों ने अपनी व्यावसायिक योजनाओं को बदल दिया और वैकल्पिक योजनाएँ तैयार की
- भारत के लगभग 45 प्रतिशत उद्यमियों ने व्यापार के नए अवसर तलाशे
- 22.5 प्रतिशत उद्यमियों ने महामारी के दौरान ऑनलाइन ट्रेडिंग में विस्तार किया

मुम्बई: वैश्विक उद्यमिता मॉनिटर (जीईएम) सर्वेक्षण दुनिया में उद्यमिता गतिशीलता का सबसे बड़ा वार्षिक अध्ययन है। भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई), अहमदाबाद ने राष्ट्रीय टीम लीडर और रिपोर्ट के प्रमुख लेखक के रूप में डॉ सुनील शुक्ला, महानिदेशक, ईडीआईआई के साथ जीईएम इंडिया सर्वे का नेतृत्व किया।

जीईएम इंडिया 2020-21 रिपोर्ट जो हाल ही में जारी की गई, भारतीयों के बीच उद्यमिता के प्रमुख पहलुओं को उनके दृष्टिकोण, गतिविधियों और आकांक्षाओं को मापकर बताती है। रिपोर्ट के निष्कर्ष नीति निर्माताओं को वर्तमान और संभावित नीतियों की समीक्षा के लिए

एक आधार प्रदान करते हैं। नीति निर्माण के लिए प्रमुख निष्कर्षों और सिफारिशों पर उचित रूप से प्रकाश डाला गया है। रिपोर्ट में 3,317 वयस्कों और राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों के सैंपल सर्वे का इस्तेमाल किया गया है।

भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) द्वारा उद्यमिता गतिशीलता पर किए गए राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण में यह बताया गया है कि 82 प्रतिशत आबादी का मानना है कि कोविड-19 महामारी के कारण होने वाली कठिनाइयों के बावजूद अपने क्षेत्र में व्यवसाय शुरू करने का अच्छा अवसर मौजूद है। ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप मॉनिटर (जीईएम) रिपोर्ट 2020-21 में यह भी बताया गया है कि 82 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि उनके पास व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान है। 47 अर्थव्यवस्थाओं में से भारत कथित रूप से तीसरे स्थान पर है।

रिपोर्ट देश में उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र पर महामारी के प्रभाव के बारे में भी जानकारी प्रदान करती है। इसमें बताया गया है कि युवाओं में असफलता का डर 1 फीसदी बढ़ा है यानी 2019-20 के 56 फीसदी से बढ़कर 2020-21 में 57 फीसदी हो गया है। इसमें यह भी बताया गया है कि उद्यमशीलता के इरादे में कमी आई है और यह 2019-20 के 33.3 प्रतिशत से घटकर 2020-21 में 20.31 प्रतिशत हो गया है।

इसी तरह, कुल प्रारंभिक चरण की उद्यमशीलता गतिविधि (टीईए) भी महामारी के कारण बुरी तरह प्रभावित हुई और पिछले वर्ष के 15 प्रतिशत की तुलना में 2020-21 में घटकर 5.34 प्रतिशत हो गई। विशेष रूप से, टीईए 18-64 आयु वर्ग के व्यक्तियों का कुल प्रतिशत है जो या तो नए उद्यमी हैं या नए व्यवसायों के मालिक/प्रबंधक हैं।

इसके अलावा, निष्कर्ष बताते हैं कि महामारी ने देश में कुल उद्यमशीलता गतिविधियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। हालांकि, युवतियों के मामले में यह अधिक गंभीर है। महिला उद्यमशीलता गतिविधियों में 79 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि पुरुष उद्यमशीलता गतिविधियों में 53 प्रतिशत की गिरावट आई। रिपोर्ट यह भी बताती है कि महामारी का घरेलू आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भारत में, लगभग 44 प्रतिशत युवाओं का विचार था कि महामारी ने उनकी घरेलू आय को प्रभावित किया है।

रिपोर्ट में कुछ प्रमुख नीतिगत सुझाव भी दिए गए हैं जो देश में उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखेंगे और इसे बढ़ावा देंगे। सुझावों में स्कूल और कॉलेज के स्तर पर उद्यमिता शिक्षा, सरकार से अधिक समर्थन, उद्यमिता के क्षेत्र में अनुसंधान और नीतिगत समर्थन, और व्यापार सलाहकारों का निर्माण शामिल है।

जीईएम इंडिया के टीम लीडर और ईडीआईआई के महानिदेशक, डॉ सुनील शुक्ला ने कहा, “उद्यमिता सतत आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक बन गया है और इसमें रोजगार के अवसर पैदा करने की बहुत बड़ी क्षमता है। देश के भीतर उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करना दुनिया भर की सरकारों और समाजों के लिए प्राथमिक उद्देश्य बन गया है। भारतीय संदर्भ में और इसकी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के साथ-साथ इसके आकार और दायरे को देखते हुए, उद्यमिता विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण देश के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में परिवर्तनकारी बदलाव ला सकता है।”

जीईएम इंडिया के सदस्य और ईडीआईआई के फैकल्टी, डॉ अमित द्विवेदी ने कहा, “जीईएम इंडिया रिपोर्ट 2020-21 डेटा विश्लेषण प्रदान करती है जो शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और पेशेवरों को आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिए उचित कार्रवाई करने में मदद कर सकती है, जिसमें व्यापक रूप से उद्यमिता विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।”

जीईएम इंडिया के सदस्य और ईडीआईआई के फैकल्टी, डॉ पंकज भारती का मानना है कि महामारी ने भारत सहित अधिकांश देशों में व्यापार और उद्यमिता को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, पिछले साल की तुलना में देश में सक्षमकारी कारक गिर रहे हैं। हालांकि, उन्होंने जोर दिया, सभी कारकों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

वैश्विक उद्यमिता मॉनिटर के बारे में

वैश्विक उद्यमिता मॉनिटर (जीईएम) सर्वेक्षण दुनिया में उद्यमशीलता की गतिशीलता का सबसे बड़ा वार्षिक अध्ययन है। जीईएम की कल्पना 1999 में की गई थी और तब से इसे अपने शोध की विश्वसनीयता और कवरेज के लिए सम्मानित किया गया है। भारतीय उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र दिन-ब-दिन मजबूत होता जा रहा है, जेम-इंडिया कंसोर्टियम भारत में तेजी से विकसित हो रही प्रकृति और उद्यमिता के स्तर की जांच करने में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है। भारतीय उद्यमिता के विविध आयामों पर शोध में अधिकतम पहुंच सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय और राज्य-स्तरीय उद्यमिता संस्थानों को शामिल करने के लिए जीईएम-इंडिया कंसोर्टियम भी अपने पंख फैला रहा है।